NEERAJ®

MGPE-11

मानव सुरक्षा

(Human Security)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Vaishali Gupta

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

मानव सुरक्षा

(Human Security)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

गाँधीवादी अध्ययन कार्यक्रम
(Gandhian Studies Programme)

1. मानव सुरक्षा की परिभाषा 1
(Defining Human Security)

2. मानव विकास, अधिकार और सुरक्षा 10
(Human Development, Rights and Security)

3. मानव सुरक्षा और शांति निर्माण 20
(Human Security and Peace Building)

4. मानव सुरक्षा पर गाँधीवादी विचारधारा 27
(Gandhian Vision of Human Security)

5. संरचनात्मक हिंसा (आर्थिक-सामाजिक और राजनीतिक) 35
(Structural Violence)

6. राज्य हिंसा (आतंकवाद, तानाशाही, सेना, इत्यादि) 43
(State Voilence – Terrorism, Dictatorship, Military)

7. राज्येत्तर हिंसा (आतंकवाद) 50
(Non-State Violence – Terrorism)

8. आपदा और विस्थापन 57
(Disaster and Development)

9. खाद्य सुरक्षा 64
(Food Security)

10. असंगठित श्रमिक वर्ग (ग्रामीण और शहरी) 77
(Unorganised Labour – Rural and Urban)

11. सीमांतिक महिलाओं और बच्चों इत्यादि का सशक्तीकरण 87
(Empowerment of the Marginalised – Women, Children)

12. 'अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सुरक्षा' 98
(International Cooperation)

13. मानव सुरक्षा का आकलन 104
(Measuring Human Security)

14. मानव सुरक्षा की विश्वव्यापी स्थिति 112
(Global State of Human Security)

15. दक्षिण एशिया में मानव सुरक्षा 119
(Human Security in South Asia)

16. भारत में मानव सुरक्षा 127
(Human Security in India)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

मानव सुरक्षा
(Human Security)

MGPE-11

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खंड में से कम से कम दो प्रश्न अवश्य कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खंड - अ

प्रश्न 1. मानव सुरक्षा पर एक 'जन-केंद्रित' अवधारणा के रूप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-1, पृष्ठ-1, 'मानव सुरक्षा की अवधारणा का विकास'

प्रश्न 2. 'मानवाधिकार, सुरक्षा और विकास अन्योन्याश्रित हैं।' चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-2, पृष्ठ-13, 'मानव अधिकारों, सुरक्षा और विकास के बीच अन्योन्याश्रय', पृष्ठ-14, 'मानव सुरक्षा और मानव विकास के बीच अन्योन्याश्रय'

प्रश्न 3. 'भय से मुक्ति' किस प्रकार 'आकांक्षा से मुक्ति' से भिन्न है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-3, पृष्ठ-21, 'भय से मुक्ति बनाम अभाव से मुक्ति'

प्रश्न 4. हिंसा के राजनीतिक और सांस्कृतिक आयामों को उपयुक्त दृष्टांतों के साथ विस्तृत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-5, पृष्ठ-37, 'सांस्कृतिक हिंसा', पृष्ठ-38, 'राजनीतिक हिंसा'

प्रश्न 5. विकास और वैश्विक तापपन के बीच संबंधों को स्पष्ट कीजिए। यह मानव सुरक्षा को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-8, पृष्ठ-61, प्रश्न 2

खंड - ब

प्रश्न 6. खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न उपायों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-9, पृष्ठ-67, 'खाद्य सुरक्षा-उपाय और उनका प्रभाव'

प्रश्न 7. भारत में ग्रामीण श्रमिकों के सामने आने वाली समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-10, पृष्ठ-78, 'ग्रामीण श्रमिक वर्ग की समस्याएँ'

प्रश्न 8. भारत में हाशिए की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए रणनीतियों की विस्तृत चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-11, पृष्ठ-95, प्रश्न 2

प्रश्न 9. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए गांधी के दृष्टिकोण को विस्तृत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-12, पृष्ठ-101, 'अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए गांधीवादी नीतिवचन'

प्रश्न 10. दक्षिण एशिया में मानव सुरक्षा की स्थिति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-15, पृष्ठ-120, 'मानव सुरक्षा और दक्षिण एशिया'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

मानव सुरक्षा
(Human Security)

MGPE-11

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग में से कम से कम दो प्रश्न अवश्य कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग - I

प्रश्न 1. 'मानव सुरक्षा का उद्देश्य मानव जीवन के महत्त्वपूर्ण केन्द्र भाग की रक्षा करना है।' विस्तार से बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 1

प्रश्न 2. मानवीय सुरक्षा और मानव विकास की परस्पर निर्भरता को विस्तृत रूप से समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-2, पृष्ठ-14, 'मानव सुरक्षा और मानव विकास के बीच अन्योन्याश्रय', 'अन्योन्याश्रय और कार्य के प्रस्तावित क्षेत्र'

प्रश्न 3. हिंसा की परिभाषा दीजिए तथा इसके विभिन्न प्रकारों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-5, पृष्ठ-35, 'हिंसा की परिभाषा', 'हिंसा का प्ररूप वर्गीकरण'

प्रश्न 4. संरचनात्मक हिंसा, लिंग असमानता और लिंगवाद के बीच संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-5, पृष्ठ-38, 'संरचनात्मक हिंसा', 'लिंग असमानता और सेक्सिज्म'

प्रश्न 5. स्वच्छ विश्व के लिए 'हरित मार्ग' क्या हो सकता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-8, पृष्ठ-58, 'स्वच्छ विश्व के लिए हरित मार्ग'

भाग - II

प्रश्न 6. 'खाद्य सुरक्षा मानव सुरक्षा की आधारशिला है।' चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-9, पृष्ठ-64, 'परिचय', 'खाद्य सुरक्षा और इसका महत्त्व'

प्रश्न 7. भारत में ग्रामीण श्रम के लिए राज्य प्रायोजित उपायों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-10, पृष्ठ-84, प्रश्न 3

प्रश्न 8. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए विभिन्न रूपरेखाओं पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-12, पृष्ठ-99, 'सहयोग की शक्ति आधारित दृष्टिकोण', 'सहयोग का ज्ञान आधारित सिद्धांत', पृष्ठ-100, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का ढाँचा'

प्रश्न 9. मानव सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को विस्तृत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-13, पृष्ठ-105, 'संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित लक्ष्य'

प्रश्न 10. वैश्वीकृत दुनिया में मानव सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए निवारक उपायों की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-14, पृष्ठ-112, 'मानव सुरक्षा की उभरती संकल्पना', पृष्ठ-113, 'मानव सुरक्षा का सार', पृष्ठ-115, 'सार्वभौमिक स्तर पर मानव सुरक्षा'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मानव सुरक्षा
(HUMAN SECURITY)

गाँधीवादी अध्ययन कार्यक्रम
(Gandhian Studies Programme)

मानव सुरक्षा की परिभाषा
(Defining Human Security)

1

परिचय

मानव सुरक्षा की अवधारणा प्राचीन काल से ही विकसित हो रही है। परंपरागत अवधारणा के अंतर्गत राज्य को सुरक्षित करने पर जोर दिया जाता था, क्योंकि ऐसा माना जाता था कि यदि राज्य सुरक्षित होगा, तो नागरिक भी सुरक्षित रहेंगे। आधुनिक लोकतांत्रिक सरकारों के आने से तथा लोगों की व्यक्तिगत सुरक्षा के विचार से सुरक्षा की नई अवधारणा का विकास हुआ। संयुक्त राष्ट्र महासभा की मानव अधिकार घोषणा में सामान्य लोगों के जीवन को अधिक सुरक्षित, स्वतंत्र और स्वस्थ रखने का विचार उजागर हुआ। डॉ. महबूब-उल-हक के विचार से सामान्य लोग व उनके जीवन की सुरक्षा को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए, जिससे उन्हें आर्थिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा, सामुदायिक सुरक्षा तथा राजनीतिक सुरक्षा मिल सके। आज मानव सुरक्षा की अवधारणा लोगों, सरकारों तथा अंतर्राष्ट्रीय सरकारों द्वारा स्वीकार की गई है।

अध्याय का विहंगावलोकन

मानव सुरक्षा की अवधारणा का विकास

परंपरागत दृष्टिकोण से यह स्वीकार किया गया कि यदि राज्य सुरक्षित है, तो उसमें रहने वाले लोग भी सुरक्षित होंगे। इस सुरक्षा के अंतर्गत राज्य की भौगोलिक सीमा में रहने वाले लोगों को शामिल किया गया। इसमें राज्य की क्षेत्रीय अखंडता तथा सुरक्षा दोनों को सम्मिलित करना सुरक्षा का प्रावधान था। लोगों का संरक्षण बाहरी खतरों से किया जाता है तथा उन्हें विकास के पूर्ण अवसर दिये जाते हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को भी बढ़ावा मिलता है।

''जन केन्द्रित'' अवधारणा में अंतरण

द्वितीय विश्व युद्ध तथा कई संयुक्त राष्ट्र संबंधी सम्मेलनों में लोगों के जीवन की सुरक्षा तथा राज्य आधारित सुरक्षा की सीमाओं की जरूरतों को समझा गया है। इन्हीं चर्चाओं के फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र महासभा ने ''सार्वभौमिक मानव अधिकार घोषणा'' को इसमें शामिल किया, जिसमें यह आह्वान किया गया कि लोगों के अधिकारों को सुरक्षित रखने तथा लोगों को एक बेहतर जीवन देने के क्या तरीके होंगे।

10 दिसम्बर, 1948 को अंगीकृत की गई घोषणा में इस बात का उल्लेख है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा को सभी राष्ट्रों व लोगों के लिए सार्वभौमिक अधिकारों की सुरक्षा करना जरूरी है। इन अधिकारों को वैध माना जाएगा तथा समय के साथ-साथ इनमें सुदृढ़ता भी आएगी, किंतु इन अधिकारों के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी राज्यों की ही होती है। यदि इन अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है तो अंतर्राष्ट्रीय समुदाय इस संबंध में कुछ नहीं कर पाता है। 25 जून, 1993 के अंगीकृत वियना घोषणा व कार्य योजना में इन अधिकारों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है–

- मानव अधिकार तथा मौलिक स्वतंत्रता सभी मनुष्यों का जन्मसिद्ध अधिकार है। उसकी सुरक्षा करना तथा उसका संवर्धन करते रहना, सरकारों की पहली जिम्मदारी है।
- मानव अधिकार आंदोलन को प्रमुखता देते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रैंक्लिन डी रूजवेल्ट ने सन 1941 के अपने एक भाषण में कहा कि पूरे विश्व हेतु भविष्य में चार आवश्यक मानव स्वतंत्रता पर जोर दिया जाएगा, जोकि इस प्रकार हैं–

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(i) भाषण व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता-विश्व में कहीं भी,

(ii) हर किसी को अपने धर्म को मानने की स्वतंत्रता,

(iii) धन कमाने या अपनी जरूरतों को पूरा करने की स्वतंत्रता,

(iv) भय से मुक्ति अर्थात अस्त्र-शस्त्रों पर उस सीमा तक नियंत्रण रखा जाएगा, जहां कोई भी राष्ट्र अपने पड़ोसी राष्ट्र पर किसी भी प्रकार का आक्रमण न कर सके।

आज सरकार के साथ-साथ बहुत से गैर-सरकारी संगठन व असंख्य अंतर्राष्ट्रीय मानक, मानव अधिकारों की सुरक्षा व संवर्धन के कार्यों में लगे हैं।

विकास और सुरक्षा के लिए मानव अधिकार दृष्टिकोण

मानव विकास को मानवीय सुरक्षा के साथ जोड़कर देखा गया है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं जैसे संयुक्त राष्ट्र ने मानव अधिकार दृष्टिकोण को इस अभिप्राय से देखा है, जिसमें मानव विकास केवल आर्थिक परिघटना न होकर मानव अधिकार का ही एक हिस्सा है। विकास केवल आर्थिक सुदृढ़ता नहीं है। इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, नागरिक, राजनीतिक व मनोवैज्ञानिक आयाम भी हैं जिन पर ध्यान देना जरूरी है। इस तरह से मानव अधिकार विकास के ऐसे रूप की मांग करता है, जोकि मानव सुरक्षा की वृद्धि में सहायक है, जैसे– सभी लोगों को न्यूनतम शिक्षा का अधिकार होना चाहिए, जिससे वे ज्ञान अर्जित कर सकें तथा अपनी आजीविका सुनिश्चित कर सकें। इस तरह से मानव विकास के लिए मानव अधिकार दृष्टिकोण के तहत संतुलित, एकीकृत व समाजीय विकास की धारणा पनपती है, जिसमें आगे मानव सुरक्षा को प्राप्त करने के मार्ग बनते हैं। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) ऐसी प्रगति का विरोध करते हैं, जो समाज में असमानता पैदा करें तथा मानव अधिकारों व साम्या के अनुपालन पर जोर देकर संतुलित विकास को बढ़ावा देते हैं। इस धारणा में विकास प्रक्रिया में कल्याण व समानता के विचारों को अग्रणी रखा जाता है।

मानव सुरक्षा की आधुनिक अवधारणा

सन 1990 के दशक के दौरान, शीत युद्ध समाप्त होने के पश्चात मानव अधिकारों के दृष्टिकोण में बदलाव आया, इसमें विकास उपायों तथा लोगों की सुदृढ़ सुरक्षा पद्धति के साथ देखा जाने लगा। मानव सुरक्षा की बहुआयामी अवधारणा को अपनाया गया जिसमें मानव विकास, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, रणनीतिक अध्ययन व मानव अधिकार को सम्मिलित किया गया। मानव सुरक्षा की जरूरत पर, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सन 1994 की मानव विकास रिपोर्ट पर बल दिया गया। इस रिपोर्ट में 'मानव सुरक्षा' अवधारणा व उसके संचालन की जरूरत पर युक्तियुक्त तरीके से पेश किया गया है। इस अवधारणा में इस बात पर जोर दिया गया है कि जब तक लोगों को उनके दैनिक जीवन में सुरक्षा नहीं मिलेगी, तब तक विश्व में शांति स्थापित नहीं की जा सकती। रिपोर्ट में कहा गया कि राष्ट्रों के मतभेद से केवल सामाजिक असमानता व विनाश में वृद्धि होती है। राष्ट्र की सुरक्षा केवल विकास में है, अस्त्रों में नहीं। इसमें यह सुझाव भी दिया है कि ''सतत मानव विकास'' की नई अवधारणा का अनुसरण किया जाना चाहिए, जिसमें 'मानव सुरक्षा' के तत्व छिपे हैं। संपूर्ण विश्व में मानव सुरक्षा के अंतर्गत कार्य सुरक्षा, आय सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा व अपराधों से सुरक्षा का अश्वासन दिया जाता है। यह रिपोर्ट उल्लेख करती है कि शांति के लिए किये जाने वाला युद्ध दो फ्रंटों पर होना चाहिए। पहला सुरक्षा फ्रण्ट पर जहां भय पर विजय पाना है तथा दूसरा आर्थिक व सामाजिक फ्रण्ट पर विजय पाना है।

समकालीन विचार

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम मानव विकास रिपोर्ट 1994 में मानव सुरक्षा पर विशेष जोर देती है तथा संयुक्त राष्ट्र ने इसे अपना मुख्य मिशन माना है। इसके साथ और भी अभिव्यक्तियां हैं, जो मानव सुरक्षा की विषय-वस्तु और महत्त्व पर रोशनी डालती हैं। लियाल एस. सूंगा मानव सुरक्षा की अवधारणा पर अपनी सहमति देते हैं, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार कानून, अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून, अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक कानून तथा अंतर्राष्ट्रीय शरणार्थी कानून सम्मिलित हैं। किंग और मुरे ने मानव सुरक्षा के उपायों पर विचार प्रस्तुत किये हैं। कुछ का मानना है कि मानव सुरक्षा ही मानव विकास की पूर्व शर्त है। कुछ इसे मानव की बुनियादी जरूरत मानते हैं।

मानव सुरक्षा की व्यवहार्य परिभाषा

सबीना एल्कीर के अनुसार मानव सुरक्षा का उद्देश्य लंबे समय तक सभी लोगों को संकटपूर्ण स्थितियों से लगातार सुरक्षा प्रदान करता है। इस व्यवहार्य परिभाषा में निम्नलिखित सम्मिलित हैं–

(i) गरीबी व हिंसा दोनों पर ध्यान देना,

(ii) अपना 'जन केन्द्रित' स्वरूप बनाना,

(iii) बहुआयामी विस्तार को बनाए रखना,

(iv) लोगों के कल्याण के लिए ''सांस्कृतिक व हानिकर संकटों'' पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है, तथा

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(v) इसके लिये प्रस्ताव दिया जाता है कि मानव सुरक्षा के उद्देश्य सिद्धांत युक्त प्रक्रियाओं द्वारा संचालनात्मक नीतियों व परियोजनाओं में विनिर्दिष्ट तथा क्रियान्वित होने चाहिए।

इसे आगे और भी विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया गया है–

(1) मानव सुरक्षा का मुख्य उद्देश्य है कि उपयुक्त संस्थाओं के द्वारा मानव को हिंसा के संकट, संघर्ष व रोग से सुरक्षा प्रदान करना, इसमें संस्थागत संरक्षण व सम्मान के तत्व भी शामिल हैं। ये संस्थाएं ऐसे तरीके से काम करती हैं, जो जोखिम पर ध्यान देने के बजाय मानव सुरक्षा पर अधिक ध्यान देती हैं।

(2) मानव सुरक्षा के अंतर्गत मानव जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर फोक्स किया जाता है। जैसे–लोगों की क्षमताओं का निर्माण करना, ताकि वे अपने आधारभूत अधिकारों का उपयोग कर सकें और अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा कर सकें।

(3) मानव सुरक्षा 'जन केन्द्रित' है। यह आयु, लिंग, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता आदि को ध्यान में रखे बिना लोगों से संबद्ध है।

(4) मानव जीवन के आधारिक कार्यों को प्रभावित करने वाले खतरों से 'मानव सुरक्षा' संरक्षण प्रदान करता है तथा ऐसे खतरों से भी संरक्षण प्रदान करता है, जो बड़ी मात्रा में और बार-बार होते हैं। जैसे–महामारी, रोग आदि। ऐसे खतरे, जिनसे दंगे व प्रदूषण फैलते हैं या अप्रत्यक्ष रूप से जो विकास में बाधा बनते हैं, उनसे भी सुरक्षा देता है।

(5) मानव सुरक्षा का उद्देश्य मानव का पोषण करना है। यह मानव के विकास के साथ-साथ मानव अधिकारों के मानवीय पहलुओं का भी ध्यान रखता है। यह लोगों की अल्पकालिक व दीर्घकालिक भलाई के लिए कार्य करता है। उन्हें रोग, हिंसा व तनाव से बचाना, उनकी नौकरियों का ध्यान रख, आर्थिक सहायता देने का कार्य मानव सुरक्षा का लक्ष्य है।

(6) मानव सुरक्षा की अवधारणा सार्वभौमिक है, जिसके लिए अलग समाजों व देशों में विश्व स्तर पर मिलकर कार्य किया गया है।

(7) भारत जैसे देश में जहां गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, कुपोषण आदि फैला हुआ है, उसके लिए 'मानव सुरक्षा' की अवधारणा का विशेष महत्त्व है। यहां पर 'मानव सुरक्षा' के आर्थिक विकास तथा सतत् मानव विकास के लिए बहुत जरूरी है।

डॉ. महबूब-उल-हक का योगदान

डॉ. महबूब-उल-हक (1999) ने मानव विकास पर महत्त्वपूर्ण कार्य किये तथा इस विषय में अपने मत दिये। उनके अनुसार परंपरागत अर्थव्यवस्था में आर्थिक वृद्धि की गई जिसके परिणामस्वरूप उच्च वृद्धि तो प्राप्त हुई, किंतु जीवन में सुधार नहीं हुआ। डॉ. महबूब-उल-हक ने मानव विकास पर 1994 में अपनी रिपोर्ट दी। इस रिपोर्ट में मानव सुरक्षा के विचार को किसी एक राष्ट्र का नहीं, बल्कि समूचे विश्व की अवधारणा बताया गया। इसमें यह विचार रखा गया कि मानव सुरक्षा के नए और हाल के मुद्दों पर अधोगामी की अपेक्षा ऊर्ध्वगामी दृष्टि से निपटना उचित है। जैसे कि वे रोग का उपचार करने के बजाय एड्स/एच.आई.वी. आदि के निवारण के विषय में सोचा गया, ताकि समाज को इस समस्या से बचाया जा सके। इसी दिशा में मानव सुरक्षा की दिशा में नए विकास प्रतिमानों तथा नई नीतियों की खोज हुई। इसमें विकसित देशों पर तथा मानव विकास सूचकांक (HDI) के विकास पर भी गौर किया गया। मानव विकास सूचकांक के विश्लेषण से मानव जीवन में व्याप्त असुरक्षाओं से निपटने की युक्तियों के लिए नीतिगत मुद्दे उठाए गए। डॉ. महबूब-उल-हक उल्लेख करते हैं कि कई विकासशील देशों में आय बहुत कम है, किन्तु उनके हथियार के आयात बहुत ज्यादा थे। इसके अलावा कुछ इस्लामी व अफ्रीकी देशों में मानव विकास का दर्जा भी काफी नीचे है। डॉ. महबूब-उल-हक ने मानव विकास पर जोर देते हुए कहा कि नई अवधारणाओं से लोगों का जीवन-स्तर सुधरेगा तथा सुरक्षा भी अधिक होगी। उन्होंने कहा कि सुरक्षा की इस अवधारणा को लोकतांत्रिक ढंग से परिवर्तित कर इसे अपनाना चाहिए। इसके अलावा सुरक्षा को विकास के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए, हथियारों के माध्यम से नहीं। लोगों को हर स्थान पर सुरक्षा मिलेगी। उनके अनुसार मानव सुरक्षा को प्राप्त करने के लिए पांच सोपान की जरूरत है। वे ये हैं–

(i) समानता पर आधारित विकास की नई अवधारणा का प्रतिमान होना चाहिए।

(ii) अस्त्र-शस्त्र सुरक्षा के बजाय मानव सुरक्षा अनिवार्य है तथा शांति लाभांश जिसका हम उपभोग कर रहे हैं, सामाजिक कल्याण हेतु व्यवहार में लाना चाहिए।

(iii) विकास सहयोग की नवीन रूपरेखा उत्तर व दक्षिण देशों के मध्य भागीदारी से विश्व स्तर पर लाना जरूरी है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(iv) सार्वभौमिक शासन की एक नवीन रूपरेखा बनानी जरूरी है।

(v) समस्त देशों को सार्वभौमिक नागरिक समाज निर्माण हेतु प्रयास करने चाहिए।

जुआन सोमाविया का 'लोगों की सुरक्षा'

जुआन सोमाविया की 'लोगों की सुरक्षा' मानव सुरक्षा का ही एक रूप है, किन्तु इसमें थोड़ा-सा अंतर है। जुआन सोमाविया की सुरक्षा संकल्पना में निम्नलिखित सामान्य सिद्धांत सम्मिलित हैं–

(1) ऐसी सुरक्षा जो दूसरों की असुरक्षा पर आधारित हो, वो ज्यादा दिन तक नहीं रह सकती।

(2) शस्त्रों के भंडार या निर्माण से अविश्वास उत्पन्न होता है, विश्वास नहीं।

(3) सुरक्षा रणनीति के तहत सैन्य बल नहीं बल्कि इसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय तथा अन्य पहलू भी शामिल हैं।

(4) मनुष्यों की सुरक्षा भी राज्य की सुरक्षा की भांति महत्त्वपूर्ण है।

उनका कहना है कि सुरक्षा की नीति का ध्येय असुरक्षा को कम करना है। असुरक्षा से समाधान के लिए असुरक्षा की जड़ तक पहुँचना जरूरी है। उन्होंने सुरक्षा के स्रोतों के रूप में तीन परिकल्पनाओं का उल्लेख किया है–

(1) गरीबी असुरक्षा को जन्म देती है, क्योंकि गरीबी और अभाव से सामाजिक तनाव, हिंसा, सशस्त्र संघर्ष व आतंकवाद जन्म लेता है, जोकि असुरक्षा के स्रोत हैं, इसलिए गरीबी से संपूर्ण समाज में असुरक्षा पैदा होती है।

(2) राजनीतिक अस्थिरता भी असुरक्षा का स्रोत है।

(3) असुरक्षा का तीसरा स्रोत है, बेरोजगारी। जो आर्थिक अनिश्चितता व निम्न आय के कारण पैदा होती है।

जुआन सोमाविया ने कुछ दक्षिणी अमरीकी देशों में नार्कोटिक्स की ओर भी संकेत किया है, जिससे अधिक मनी लांडरिंग, भ्रष्टाचार आदि फैला है। उन्होंने राजनीतिक व आर्थिक अनिश्चितताओं के महत्त्व पर भी जोर दिया है।

डॉ. अमर्त्य सेन के विचार

डॉ. अमर्त्य सेन को कल्याण अर्थशास्त्र में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 1998 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनका मत है कि कल्याण अर्थशास्त्र को मनुष्यों की क्षमताओं के विकास के विषय पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने अपने अध्ययनों के आधार पर खाद्य सुरक्षा के महत्त्व पर रोशनी डाली। उन्होंने कहा कि मनुष्य जो वस्तुओं व सेवाओं के रूप में क्या उपभोग कर सकते हैं, ये उनका हक है जोकि इस बात पर निर्भर करता है कि उनकी स्थायी निधि कितनी है और यदि ऐसा देखें तो गरीबों के पास स्थायी निधि बहुत कम होती है। इसलिए गरीबों में कार्यात्मक योग्यताओं का विकास करना जरूरी है, ताकि वे अपने जीवन को बेहतर बना सकें। वह सार्वजनिक कार्रवाई को उचित बताते हैं, जिसमें सरकार के साथ-साथ गरीबों के लिए काम करने वाले गैर-सरकारी संगठन भी शामिल हैं। वे ऐसे कार्यों को सराहनीय व उचित मानते हैं जो गरीबों तथा सुविधावंचित वर्गों की सहायता करते हैं, उनकी क्षमताओं व हकदारियों में वृद्धि करते हैं।

गाँधी जी के विचार

महात्मा गाँधी जी के समय पर सुरक्षा की अवधारणा प्रचलित नहीं थी। गरीबी व असमानता को आर्थिक समस्या के रूप में देखा जाता था, सुरक्षा समस्याओं के रूप में नहीं, इसलिए गाँधी जी ने 'मानव सुरक्षा' जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया, किन्तु यदि उनके समय पर यह अवधारणा होती तो वे इस पर अपने विचार व्यक्त करते और इस अवधारणा का स्वागत करते। वह एकाधिकार का विरोध करते थे। उन्होंने कहा–"मैं ईश्वर के एकत्व पर विश्वास करता हूँ, इसलिए मानवता मेरे लिए सर्वोपरि है।" उनके विचारों के अनुसार अमीर व गरीब के बीच कोई अंतर नहीं होना चाहिए। उन्होंने मजदूरी की समानता पर भी जोर दिया है। उनके विचारों के अनुसार उत्पादन सामाजिक जरूरतों के अनुसार निर्धारित होना चाहिए न कि व्यक्तिगत या लोभ के लिए। उन्होंने व्यापार में न्यासिता सिद्धांत की वकालत की है। ये सिद्धांत सभी के लिए विशेषकर श्रमिकों के लिए लाया जाना चाहिए। उन्होंने "प्रत्येक को उनकी योग्यताओं के अनुसार तथा प्रत्येक को उनकी जरूरतों के अनुसार" सिद्धांत पर जोर दिया। वे 'सर्वोदय' और 'अंत्योदय' की वकालत करते थे, जिसका अर्थ है सभी का विकास हो और सबसे पहले गरीब का विकास हो। उनका आदर्श था 'सादा जीवन उच्च विचार।'

मानव सुरक्षा का क्षेत्र और महत्त्व

डॉ. महबूब-उल-हक ने मानव सुरक्षा की अवधारणा पर जोर दिया। उनके अनुसार निम्नलिखित सात क्षेत्रों में मानव सुरक्षा की जरूरत पड़ती है–

1. आर्थिक सुरक्षा–वर्तमान में लगभग एक-चौथाई जनसंख्या आर्थिक दृष्टि से असुरक्षित है, और यह समस्या केवल विकासशील

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com